

Assignment 21

Translate the passage “**Why narrating and why now?**” into Hindi, and the passage “**प्रण की रक्षा**” into English.

[In both cases, if it helps you, you may use the steps of Interpretation/Expression that we studied in class earlier.]

Why narrating and why now?

On glancing over my notes of the seventy odd cases in which I have during the last eight years studied the methods of my friend Sherlock Holmes, I find many tragic, some comic, a large number merely strange, but none commonplace; for, working as he did rather for the love of his art than for the acquirement of wealth, he refused to associate himself with any investigation which did not tend towards the unusual, and even the fantastic. Of all these varied cases, however, I cannot recall any which presented more singular features than that which was associated with the well-known Surrey family of the Roylotts of Stoke Moran. The events in question occurred in the early days of my association with Holmes, when we were sharing rooms as bachelors in Baker Street. It is possible that I might have placed them upon record before, but a promise of secrecy was made at the time, from which I have only been freed during the last month by the untimely death of the lady to whom the pledge was given. It is perhaps as well that the facts should now come to light, for I have reasons to know that there are widespread rumours as to the death of Dr. Grimesby Roylott which tend to make the matter even more terrible than the truth.

[From *Sir Arthur Conan Doyle*]

प्रण की रक्षा

अजमेर किले में किलेदार ने चीखकर कहा,
“मराठे लुटेरे आ रहे हैं,
सब तैयार हो जाओ।”

दोपहर का वक्त था।
लोग अपने अपने घरों में रोटियाँ सेंक रहे थे।
किले के फाटक पर नगाड़ा बजने पर दौड़कर बाहर आए।
दीवार पर चढ़कर देखा।

दूर दक्षिण में मराठी सेना के घोड़ों की टाप से आसमान में धूल उड़ रहा था।

किलेदार ने राजपूतों को ललकारा,

“यह मराठे टिड्डों का दल हमारी तलवार की आग से बचकर वापस न जा पाए।”

लेकिन, मारवाड़ से आकर दूत ने कहा,

“यह फौजी तैयारी किसी काम की नहीं।

किलेदार साहब, मालिक का हुक्मनामा यह देखो।

सिन्धिया आ रहे हैं, साथ में फिरंगी सेनापति हैं।
तुम इज्जत के साथ उनको किला छोड़ दोगे।
तुम्हारे लिए यह हुक्म है।
विजयश्री अभी महाराज विजयसिंह के साथ नहीं है।
तुम्हें बिना युद्ध अजमेर का किला मराठों के हवाले करना
है।”

आह भरकर किलेदार ने कहा,

“मालिक के हुक्म और बहादुरी के फर्ज के बीच आज
मुकाबला खड़ा हो गया।”

मारवाड़ के दूत ने ऐलान कर दिया,

“लड़ाई की तैयारियाँ बन्द कर दो।”

किलेदार पत्थर की मूरत जैसा खड़ा रहा।

शाम हो चली है।

मैदान सूना हो चला है।

दूर दूर पर कुछ गायें चर रही हैं।

कहीं पेड़ की छाँव में किसी चरवाहे की वीण मायूस धुन में बज रही है।

गम खाकर किलेदार सोचता है,

“जब मालिक ने मुझे अजमेर का किला सौंपा था, तब मन में मैंने प्रण किया था कि जीते जी मालिक का किला दुश्मन के हाथों जाने नहीं दूँगा।

मालिक के ही हुक्म से आज वह प्रण तोड़ना पड़ेगा क्या ?”

राजपूत फौज रंज के साथ शर्मसार होकर जंग की तैयारी छोड़ चुकी थी।

किलेदार अकेला फाटक पर चुपचाप खड़ा रह गया।

पश्चिम की ओर साँझ का अँधेरा उतर आया।

मराठी सेना धूल उड़ा कर किले के फाटक पर आकर रुकी ।

“फाटक के पास लेटा हुआ कौन है जी ?

उठो, उठो, दरवाजे खोलो ।”

कोई नहीं सुनता है ।

बेजान जिस्म जवाब नहीं देती है ।

मालिक के हुक्म और बहादुरी के फर्ज के बीच के विरोध को

मिटाने के लिए किलेदार फाटक पर दम तोड़ चुका था ।

[रवीन्द्र नाथ ठाकुर से]